चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	26-11-25	3	7-8

The Tribune
ESTABLISHED IN 1881

HAU TO HOST ECONOMICS MEET

Hisar: CCS Haryana Agricultural University would host the 85th National Conference of the Indian Society of Agricultural Economics from November 26 to 28. The conference secretary, SK Pahuja, said over 250 scientists, academics, policymakers and representatives from ICAR and industry would participate. TNS

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.11.25	4	2-8

35 साल के बाद आयोजन • एचएयू में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ इकोनॉमिक्स का तीन दिवसीय 85वां वार्षिक सम्मेलन शुरू

हरियाणा का कृषि उत्पादन 26.8 लाख टन से 221.1 लाख टन तक पहुंचा : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज़ | हिसार-

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के तीन दिवसीय 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इसमें देशभर आए वैज्ञानिक कृषि के विभिन्न पहलुओं पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

सम्मेलन का शुभारंभ एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किया। उन्होंने कहा कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी है। सम्मेलन में सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, ग्रामीण विकास, क्रेडिट, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, व्यापार नीतियों, वैश्विक बाजारों और तकनीकी नवाचारों सहित विभिन्न मुद्दों पर देश की कृषि व्यवस्था की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के दौरान नई तकनीकों और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए स्मार्ट कृषि, डिजिटल एग्रीकल्चर, एआई आधारित समाधान तथा नवाचार जैसी नवीनतम तकनीकी जानकारी सांझा की जाएगी।

एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि हरियाणा का वर्ष 1966 में कृषि क्षेत्र 37.32 लाख हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024 में 59.07 लाख हेक्टेयर हो गया। जबकि कृषि उत्पादन 26.8 लाख टन से बढ़कर 221.1 लाख टन हो गया। इसी प्रकार खाने के अनाज की पैदावार वर्ष 1966 में 736 किलोग्राम/ हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024 में 4131 किलोग्राम/ हेक्टेयर हो गई। एचएयू में 35 वर्ष के बाद उपरोक्त सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

पुस्तक विमोचन करते वीसी प्रो. बीआर काम्बोज, प्रो. दिनेश के मारोठिया।

उत्पादन, आय, बाजार ढांचा की समीक्षा जरूरी : प्रो. मारोठिया

प्रो. दिनेश के मारोठिया ने बताया कि कृषि क्षेत्र की वर्तमान स्थिति का आकलन करने के लिए कृषि उत्पादन, किसानों की आय, बाजार ढांचा, लागत लाभ, ग्रामीण रोजगार और व्यापार स्थिति की समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। भविष्य की कृषि नीतियों के लिए सुझाव विकसित करना बहुत जरूरी है। सम्मेलन में ऐसे ठोस सुझाव तैयार किए जाएं जिनको सरकार कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए अपनी नीतियों में शामिल कर सकें।

उद्यमिता के प्रति करना होगा जागरूक

केंद्रीय विवि धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ. एचआर शर्मा ने बताया कि कृषि को एक लाभप्रद व्यवसाय बनाने, किसानों को उद्यमिता के प्रति जागरूक करने तथा कम लागत में अधिक उत्पादन करके देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। सोसाइटी के सचिव डॉ. कमल भाटा ने सभी का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के. मारोठिया, सचिव डॉ. कमल वाटा तथा केंद्रीय विवि धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ. एचआर शर्मा तथा उपरोक्त कॉलेज के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एसके पाहुजा भी उपस्थित रहे। सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एस के पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन छात्रा श्वेता छाबड़ा ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27.11.25	५	2-6

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी : काम्बोज

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी आफ एग्रीकल्चर आफ इकोनामिक्स का वार्षिक सम्मेलन शुरू

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी आफ एग्रीकल्चर इकोनामिक्स के 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने किया। कृषि महाविद्यालय के आडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन सोसाइटी आफ एग्रीकल्चर इकोनामिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के. मारोठिया, सचिव डा. कमल वाटा तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डा. एचआर शर्मा तथा उपरोक्त महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डा. एसके पाहुजा भी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि, कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी है। यह सम्मेलन देश के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों को एक मंच प्रदान करता है जहां पर वे कृषि क्षेत्र की मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों पर सघन

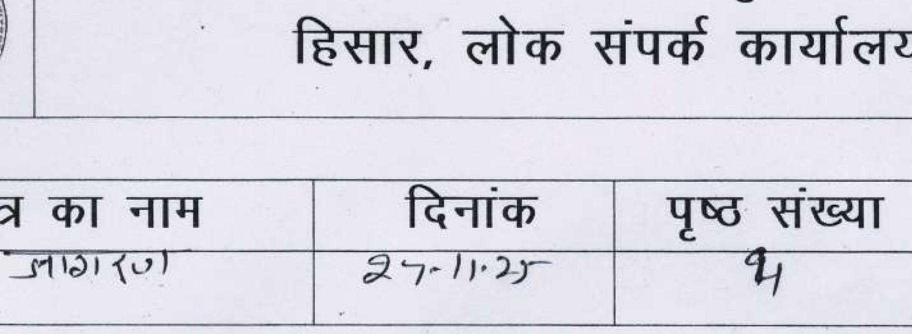

कुलपति प्रो . बीआर काम्बोज पुस्तकें व रिसर्च पेपर का विमोचन करते हुए • पीआरओ

विचार-विमर्श करते हैं। सम्मेलन में सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, ग्रामीण विकास, क्रेडिट, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, व्यापार नीतियों, वैश्विक बाजारों और तकनीकी नवाचारों सहित विभिन्न मुद्दों पर देश की कृषि व्यवस्था की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के दौरान नई तकनीकों और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए स्मार्ट कृषि, डिजिटल एग्रीकल्चर, एआई आधारित समाधान तथा नवाचार जैसी नवीनतम तकनीकी जानकारी साझा की जाएगी। उन्होंने बताया कि हरियाणा का वर्ष 1966 में कृषि क्षेत्र 37.32 लाख हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024 में 59.07 लाख हेक्टेयर हो गया जबकि कृषि उत्पादन 26.8 लाख टन से बढ़कर 221.1 लाख टन हो गया। इसी प्रकार खाने के अनाज की पैदावार वर्ष 1966 में 736 किलोग्राम/हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024 में 4131 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई। सम्मेलन में पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन भी किया गया। गौरतलब है कि हकृवि में 35 वर्ष के पश्चात उपरोक्त सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

व्यापार स्थिति की समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक : प्रो. दिनेश : प्रो दिनेश के मारोठिया ने बताया कि कृषि क्षेत्र की वर्तमान स्थिति का आकलन करने के लिए कृषि उत्पादन, किसानों की आय, बाजार ढांचा, लागत लाभ, ग्रामीण रोजगार और व्यापार स्थिति की समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि भविष्य की कृषि नीति के लिए सुझाव विकसित कर बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा सम्मेलन में ऐसे ठोस सुझाव तै किए जाएं जिनको सरकार कृषि क्षे को सुदृढ़ करने के लिए अप नीतियों में शामिल कर सकें।

केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशा के पूर्व कुलपति डा. एचआर श ने बताया कि कृषि को ल लाभप्रद व्यवसाय बनाने, किस को उद्यमिता के प्रति जागरू करने तथा कम लागत में अधि उत्पादन करके देश की ख सुरक्षा सुनिश्चित करना अत आवश्यक है। उन्होंने सम्मेलन कृषि क्षेत्र से संबंधित विभि विषयों के बारे में विस्तृत प्रस्तु दी। सोसाइटी के सचिव कमल भाटा ने विस्तार जानकारी दी। कृषि महाविद्या के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन आयोजन सचिव डा. एस पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव पा किया। मंच संचालन छात्रा श छाबड़ा ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	27-11-25	2	2-5

भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है कृषि : वीसी

एचएयू में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ इकोनॉमिक्स का वार्षिक सम्मेलन शुरू

संवाद न्यूज एजेंसी

पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्रोत : एचएयू

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में बुधवार को इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने किया। इस दौरान किसानों के लिए चलाई जा रहीं विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। सम्मेलन में पुस्तकों व रिसर्च पेपर का विमोचन भी किया गया।

कांबोज ने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। सम्मेलन में कृषि क्षेत्र की मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों पर विचार-विमर्श होगा। सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे।

उन्होंने बताया कि हरियाणा का वर्ष 1966 में कृषि क्षेत्र 37.32 लाख हेक्टेयर था तो वर्ष 2024 में बढ़कर 59.07 लाख हेक्टेयर हो गया जबकि कृषि उत्पादन 26.8 लाख टन से बढ़कर 221.1 लाख टन हो गया। अनाज की पैदावार वर्ष 1966 में 736 किलोग्राम/हेक्टेयर थी जो 2024 में 4131 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई।

इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के मारोठिया, केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ. एचआर शर्मा, सोसाइटी के सचिव डॉ. कमल भाटा ने अपने विचार रखे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता व सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एसके पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	27-11-25	5	3-5

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी : प्रो. काम्बोज

- हकृवि में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ इकोनॉमिक्स का वार्षिक सम्मेलन शुरू

हिसार, 26 नवम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बी.आर. काम्बोज ने किया। कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के. मारोठिया, सचिव डॉ. कमल वाटा तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ एच. आर. शर्मा तथा उपरोक्त महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ एस के पाहुजा भी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन करते हुए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी है। यह सम्मेलन देश के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों को एक मंच प्रदान करता है जहां पर वे कृषि क्षेत्र की मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों पर सघन विचार-विमर्श करते हैं। सम्मेलन में सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, ग्रामीण विकास, क्रेडिट, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, व्यापार नीतियों, वैश्विक बाजारों और तकनीकी नवाचारों सहित विभिन्न मुद्दों पर देश की कृषि व्यवस्था की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के दौरान नई तकनीकों और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए स्मार्ट कृषि, डिजिटल एग्रीकल्चर, एआई आधारित समाधान तथा नवाचार जैसी नवीनतम तकनीकी जानकारी साझा की जाएगी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एसके पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन छात्रा श्वेता छाबड़ा ने किया। इस अवसर पर सम्मेलन में भाग ले रहे कृषि अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, नीति निर्धारक और शोधार्थियों सहित विश्वविद्यालय के कुलसचिव, अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व शोधार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	27-11-25	9	2-4

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी : प्रो. काम्बोज

■ हकृवि में इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्रीकल्चर ऑफ़ इकोनॉमिक्स का वार्षिक सम्मेलन शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार : पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी ऑफ़ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने किया। कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के. मारोठिया, सचिव डॉ. कमल वाटा तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ एचआर शर्मा तथा उपरोक्त महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एसके पाहुजा भी उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी है। यह सम्मेलन देश के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों को एक मंच प्रदान करता है जहां पर वे कृषि क्षेत्र की मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों पर सघन विचार-विमर्श करते हैं। सम्मेलन में सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, ग्रामीण विकास, क्रेडिट, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, व्यापार नीतियों, वैश्विक बाजारों और तकनीकी नवाचारों सहित विभिन्न मुद्दों पर देश की कृषि व्यवस्था की समीक्षा की जाएगी। सम्मेलन में पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन भी किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	27-11.25	6	7-8

दैनिक भास्कर

गन्ने में कंडुआ व लाल सड़न रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ नष्ट करें

सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए करें छिड़काव

भास्कर न्यूज | हिसार

गन्ने की फसल में यदि दुमदार कंडुआ नजर आए तो गन्ने के अंगुओं के ऊपर सावधानी से बोरी चढ़ाकर नीचे से काट लें, फिर पूरे पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें। लाल सड़न रोग से प्रभावित पौधों की भी उखाड़कर नष्ट कर दें।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि पायरिल्ला की रोकथाम के लिए 400-600 मिली. मैलाथियान 50 ईसी को 400-600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए 800 मिली. मैलाथियान 50 ईसी. या 600 मिली. रोगोर 30 ईसी. 400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। किसान बहुत रेतीली जमीन में एक भारी सा रोलर पानी लगाने के 48 घंटे के बाद 6-7 दफा फेर दें।

ट्यूबवेल के पानी व मिट्टी की जांच जरूर कराएं

ट्यूबवेल के पानी और मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला से अवश्य टेस्ट करवाकर प्रयोग करें। पानी का नमूना लेने के लिए ट्यूबवेल को 1 से 2 घंटा चलाने के बाद एक साफ-सुथरी शीशे या प्लास्टिक की बोतल में पानी भर लें। उस बोतल पर अपना नाम व पता, खेत का नाम, ट्यूबवेल की गहराई तथा जिस किस्म की जमीन में पानी लगाना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	27-11-25	6	2-5

दैनिक भास्कर

रबी सीजन • पीला रतुआ प्रभावित क्षेत्रों में पीबीडब्ल्यू 373, एचडी 2851 किस्में न उगाएं

गेहूं की पछेती बिजाई के लिए उपयुक्त समय, पीला रतुआ प्रतिरोधी किस्मों का ही करें चयन

यशपाल सिंह | हिसार

गेहूं की पछेती बिजाई नवंबर के अंतिम सप्ताह से 25 दिसंबर तक कर सकते हैं। पछेती बिजाई के लिए डब्ल्यूएच 1309, डब्ल्यूएच 1124, डीबीडब्ल्यू 173, एचडी 3059 एवं पी बी डब्ल्यू 771 किस्मों का प्रयोग कर सकते हैं। पीला रतुआ प्रभावित हरियाणा के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में किसान पीबीडब्ल्यू 373, डब्ल्यूएच 711, एचडी 2851 आदि किस्में न उगाएं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि पछेती बिजाई के लिए 50 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ पर्याप्त है। बिजाई कतारों में, खाद-बीज ड्रिल या पोरा विधि से 18 सेंटीमीटर की दूरी पर करें। ध्यान रहे कि पछेती बिजाई 4-5 सेंटीमीटर से अधिक गहरी न करें। किसान कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर ही किस्मों का चयन करें। साथ ही उचित समय पर खाद व पानी देकर अच्छा उत्पादन ले सकते हैं।

जंगली पालक, मालवा व हिरणखुरी पर नियंत्रण के लिए यह करें

गेहूं विभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने बताया कि गेहूं में मालवा, जंगली पालक, हिरणखुरी व अन्य चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए कारफेन्ट्राजोन ईथाईल (एफीनिटी) 40 प्रतिशत डीएफ की 20 ग्राम प्रति एकड़ या सभी प्रकार के चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए लेनफिड़ा मैटसल्फ्यूरॉन 10% कारफेन्ट्राजोन 40% मिश्रण की 20 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ 0.2% सहायक पदार्थ के हिसाब से 200-250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यह छिड़काव बौनी किस्मों में बिजाई के 30-35 दिन बाद व देसी किस्मों में बिजाई के 40-45 दिन बाद जब पौधों में 3-6 पत्तियां बन जाएं करना चाहिए। 2,4-डी का प्रयोग गेहूं की डब्ल्यू एच-283 किस्म में तथा मिलवां गेहूं के साथ चना, सरसों आदि की फसल में न करें।

खरपतवारों की रोकथाम के लिए करें निराई-गुड़ाई

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि खरपतवारों की रोकथाम के लिए फसल की शुरू की बढ़वार में लगभग 30 दिन के अंदर एक बार निराई-गुड़ाई करें। यदि खरपतवारों की रोकथाम शाकनाशकों द्वारा करनी हो तो चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2,4-डी का प्रयोग करें। इसके लिए 250 ग्राम 2,4-डी (सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत) को या 300 मिली. 2,4-डी (एस्टर 34.6 प्रतिशत) या एलग्रीप 8 ग्राम 250 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ में छिड़काव करें।

मंडूसी-कनकी और जंगली जई का नियंत्रण जरूरी

ऐसे क्षेत्रों में जहां पर कनकी में आईसोप्रोटूरान प्रतिरोधकता नहीं आई है, वहां आईसोप्रोटूरान 75 प्रतिशत का प्रयोग लाभदायक है। प्रतिरोधकता वाले क्षेत्र में आइसोप्रोटूरान का प्रयोग बंद कर दिया गया है। कनकी प्रतिरोधकता वाले क्षेत्रों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतुक्लोडिनोफोप (टोपिक या मुल्ला या प्वाइंट या रक्षक प्लस या जय विजय या टोपल) 15 प्रतिशत, 160 ग्राम प्रति एकड़ या सल्फोसल्फयूरान लीटर सफल-75 या इसएफ-10 ये 75 प्रतिशत घुपा. 13 ग्राम प्रति एकड़ और 500 मिली. पृषठ सक्रिय क्रमक/चिपचिपा या सहायक पदार्थ या पिनोक्साडैन एक्सियल 5 प्रतिशत इसी 400 मिली. मात्रा प्रति एकड़ बिजाई के 30-35 दिन बाद 200-250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	26.11.2025	--	--

हकृवि में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ इकोनॉमिक्स का वार्षिक सम्मेलन शुरू

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो बी.आर. काम्बोज ने किया। कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के. मारोठिया, सचिव डॉ. कमल वाटा तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ एच. आर. शर्मा तथा उपरोक्त महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ एस के पाहुजा भी उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। यह सम्मेलन देश के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों को एक मंच प्रदान करता है जहां पर वे कृषि क्षेत्र की मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों पर सघन विचार-विमर्श करते हैं। सम्मेलन में सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, ग्रामीण विकास, क्रेडिट, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, व्यापार नीतियों, वैश्विक बाजारों और तकनीकी नवाचारों सहित विभिन्न मुद्दों पर देश की कृषि व्यवस्था की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के दौरान नई तकनीकों और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए स्मार्ट कृषि, डिजिटल एग्रीकल्चर, एआई आधारित समाधान तथा नवाचार जैसी नवीनतम तकनीकी जानकारी साझा की जाएगी। कुलपति ने हरियाणा सरकार द्वारा किसानों के कल्याणार्थ चलाई जा रही मेरा पानी-मेरी विरासत, मेरी फसल-मेरा ब्योरा, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, भावांतर भरपाई योजना सहित विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, सौर ऊर्जा तकनीक व बागवानी फसलों को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया। सम्मेलन में पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन भी किया गया। गौरतलब है कि हकृवि में 35 वर्ष के पश्चात उपरोक्त सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। प्रो दिनेश के मारोठिया ने बताया कि कृषि क्षेत्र की वर्तमान स्थिति का आकलन करने के लिए कृषि उत्पादन, किसानों की आय, बाजार ढांचा, लागत लाभ, ग्रामीण रोजगार और व्यापार स्थिति की समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि भविष्य की कृषि नीतियों के लिए सुझाव विकसित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में ऐसे ठोस सुझाव तैयार किए जाएं जिनको सरकार कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए अपनी नीतियों में शामिल कर सकें। अनुसंधान एवं डाटा आधारित निर्णयों को प्रोत्साहित करना, किसानों की आय वृद्धि, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर रणनीति तैयार करना, सहयोग और नेटवर्किंग को बढ़ावा देना, देश की विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालय और शोधकर्ताओं के बीच सहयोग को मजबूत करना जरूरी है। केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ एच आर शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि कृषि को एक लाभप्रद व्यवसाय बनाने, किसानों को उद्यमिता के प्रति जागरूक करने तथा कम लागत में अधिक उत्पादन करके देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सम्मेलन में कृषि क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों के बारे में विस्तृत प्रस्तुति दी। सोसाइटी के सचिव डॉ कमल वाटा ने सभी का स्वागत करते हुए सोसाइटी द्वारा गत वर्षों के दौरान अर्जित की गई उपलब्धियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सोसाइटी कृषि अर्थशास्त्र शोध को बढ़ावा देने, शोध पत्र प्रकाशित करने, युवा शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित करने तथा कृषि सांख्यिकी और डेटा संग्रह करने के साथ साथ वार्षिक सम्मेलन व कार्यशाला आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ एस के पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन छात्रा श्वेता छाबड़ा ने किया। इस अवसर पर कृषि अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, नीति निर्धारक और शोधार्थियों सहित विश्वविद्यालय के कुलसचिव, अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक व शोधार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग न्यूज	26.11.2025	--	--

सम्मेलन हकृवि में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ इकोनॉमिक्स का वार्षिक सम्मेलन शुरू

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी : प्रो. बीआर काम्बोज

➡ विभिन्न पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का किया विमोचन

जगमार्ग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के 85वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया।

कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष प्रो. दिनेश के. मारोठिया, सचिव डॉ. कमल वाटा तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के पूर्व कुलपति डॉ एचआर शर्मा तथा उपरोक्त महाविद्यालय के अधिष्ठाता

एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ एस के पाहुजा भी उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। यह सम्मेलन देश के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों को एक मंच प्रदान करता है जहां पर वे कृषि क्षेत्र की मौजूदा और भविष्य की चुनौतियों पर सघन विचार-विमर्श करते हैं। सम्मेलन में सरकार की कृषि नीति, मूल्य नीति, एमएसपी, ग्रामीण विकास, क्रेडिट, जोखिम प्रबंधन और खाद्य सुरक्षा जैसे विषयों पर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, व्यापार नीतियों, वैश्विक बाजारों और तकनीकी नवाचारों सहित विभिन्न मुद्दों पर देश की कृषि व्यवस्था की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के दौरान नई तकनीकों और नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए स्मार्ट कृषि, डिजिटल एग्रीकल्चर, एआई आधारित समाधान तथा नवाचार जैसी नवीनतम तकनीकी जानकारी साझा की जाएगी। उन्होंने बताया कि हरियाणा का वर्ष 1966 में कृषि क्षेत्र 37.32 लाख हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024 में 59.07 लाख हेक्टेयर हो गया जबकि कृषि उत्पादन 26.8 लाख टन से बढ़कर 221.1 लाख टन हो गया। इसी प्रकार खाने के अनाज की पैदावार वर्ष 1966 में 736 किलोग्राम/हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024 में 4131 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई। कुलपति ने हरियाणा सरकार द्वारा किसानों के कल्याणार्थ चलाई जा रही मेरा पानी-मेरी विरासत, मेरी फसल-मेरा ब्योरा, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, भावांतर भरपाई योजना सहित विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन, प्राकृतिक खेती, सौर ऊर्जा तकनीक व बागवानी फसलों को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक करने का भी आह्वान किया। सम्मेलन में पुस्तकों एवं रिसर्च पेपर का विमोचन भी किया गया।